nknklkgsc tksfrjke xksMls vkVZl~] dkWelZ] lk;Ul dkWyst] oMwt

fganh foHkkx

MkW- f{kfrt /kqekG

lnL;] fganh v/;;u eaMy]
f”kokth fo”ofon~;ky;]
dksYgkiqj

ch-,- Hkkx 3 iz"ui= 10

iz;kstuewyd fganh

जन संचार

संचार

संचार के मूल मे चर धातु है, जिसका अर्थ है विचरण करना, एक जगह से दूसरी जगह पहुँचना। यह पहुँचना मनुष्य,प्राणियों, ध्वनि,चित्र, प्रकाश किसी का भी हो सकता है।परंतु हम जिस संचार की बात कर रहे है उसका अर्थ है- मानव के संदेशों को पहुँचाना, पहुँचाने से तात्पर्य है- संदेश भेजना और प्राप्त करना। यह संचार मुखे से बोलकर, लिखकर तथा दृश्य-श्रव्य माध्यमों के सहारे होता है। इसलिए संचार की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है- सूचनाओं, विचारों, और भावनाओं को लिखित, मौखिक या दृश्य-श्रव्य माध्यमों के ज़रिए सफलतापूर्वक एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना ही संचारहै।

संचार- माध्यम

संचार स्वयं एक प्रक्रिया है, एक जगह से दूसरी जगह पहुँचने की प्रक्रियायह प्रक्रिया प्रायः किसी प्राकृतिक माध्यम के सहारे गति करती है। संचार माध्यम से आशय है- वे उपकरण या साधन जो हमारे संदेश को पहुँचाते है।

जैसे समाचार पत्र, फिल्म,टेलिफोन,रेडियो,दूरदर्शन,इंटरनेट आदि।

संदेश संचार प्रक्रिया
संचारकर्ता
एन्कोडिंग
डिकोडिंग
प्राप्तकर्ता
प्रतिक्रिया

- **संचारकर्ता**

किसी संदेश को भेजने वाला संचारक या स्त्रोत कहलाता है ।
उसका प्रथम गुण है- संदेश की स्पष्टता
उसका दूसरा गुण है- संदेश को प्राप्तकर्ता के अनुकूल कूटीकृत करने की क्षमता ।

- **एन्कोडिंग**

संदेश को भेजने के लिए शब्दों ,संकेतों या ध्वनि चित्रों का उपयोग किया जाता है । भाषा भी एक प्रकार का कट चिह्न हैं । अत: प्राप्तकर्ता को समझाने योग्य कूटों में संदेश को बाँधना कूटीकरण या एनकोडिंग कहलाती हैं ।

- **डिकोडिंग**

कूटीकरण की उल्टी प्रक्रिया कूटवाचन कहलाती है । इसके माध्यम से संदेश का प्राप्तकर्ता कूट चिह्नों में बँधे संदेश समझता है । इसके लिए आवश्यक है कि प्राप्तकर्ता भी कोड का वही अर्थ समझता हो जो कि संचारक समझता है।

• प्राप्तकर्ता

संदेश का कूटवाचन होने के बाद वह प्राप्तकर्ता के पास पहुँचता है परंतु सचार प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की बाधा आ जाए तो उसे शोर कहते है ।

यह बाधा संचारक की ओर से या कूटीकरण या कूटवाचन किसी भी समय पर हो सकती है जिससे सचारक और प्राप्तिकर्ता के बीच मे सचार नही हो पाता।

• प्रतिक्रिया

कूटीकृत संदेश के पहुँचने पर प्राप्तकर्ता अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता है।

इसी से पता चलता है क़ि संचारक का संदेश प्राप्तकर्ता तक पहुँच गया है और ठीक-ठीक पहुँचा है।

संचार के विविध प्रकार

- **सांकेतिक संचार:**

संकेतों द्वारा संदेश पहुँचाना ,इनमे मनुष्य अपने अंगों का अथवा अन्य उपकरणों का प्रयोग करता है जैसे हाथ जोड़ना, पावं छूना, हाथ मिलाना आदि ।

- **मौखिक संचार:**

मुख द्वारा व्यक्त ध्वनियों के माध्यम से संदेश पहुँचाना जैसे टेलिफोन, बातचीत, भाषण देना आदि।

- **अमौखिक संचार:**

मौखिक संचार के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के संचार साधन अमौखिक संचार कहलाते हैं जेसे : **सांकेतिक संचार** , लिखित संचार , **चित्र –फिल्म आदि द्वारा संचार ।**

- **अन्तः वैयक्तिक संचार**

  एक व्यक्ति का अपने आप से बातचीत करना अतः वैयक्तिक संचार है मनुष्य अकेला होने पर भी अपने आप से बातचीत करता है जैसे डायरी लेखन, आत्मपरक वैयक्तिक कविताओं से संचार करना ।

- **अंतर वैयक्तिक संचार**

  यह दो व्यक्तियों के बीच मे होता है जैसे दो मित्रों की बातचीत, माँ - बेटी की बातचीत या किसी परिचित-अपरिचित की बातचीत ।

- **समूह संचार**

  ज़ब एक व्यक्ति एक से अधिक व्यक्तियों से बात करता है वह समूह संचार होता है। इसमे जो भी व्यक्ति भाव प्रकट करता है वो समूह के लिए होना चहिए। कक्षा में पढ़ाना, किसी संस्था की बैठक, चर्चा या भाषण समूह संचार है।

- **जन संचार**

  जन संचार नई सभ्यता का शब्द है। जब से संचार में नई तकनीकें विकसित हुई है, तब से यह शब्द प्रयोग मे आया है। जब हम किसी समूह के साथ प्रत्यक्ष संवाद करने के बजाए किसी यांत्रिक माध्यम से संवाद स्थापित करते हैं, उसे जन संचार कहते ह। जैसे समाचार पत्र, रेडियो, फिल्म, दूरदर्शन आदि।

जन संचार की विशेषता

- **सार्वजनिकता**

इसमे संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच में कोई सीधा संबंध नही होता। एक कार्यक्रम एक ही समय पर देश-विदेश में लोग देख रहे होते हैं और सबकी उसमें रूचि सार्वजनिक महत्व के कारण होती है।

- **अत्यधिक व्यापकता**

जन संचार माध्यमों के व्यापकता की संभावना करोड़ों-अरबों तक हो सकती है। क्रिकेट का खेल हो, विशेष राजनीतिक-सामाजिक अवसर हों, इनका दर्शन करोड़ों लोग एक साथ करते हैं।

संचार

औपचारिक संगठन :

जन संचार के सभी माध्यम औपचारिक संगठन दवारा चलाए जाते है जैसे समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन आदि।

प्रतिक्रिया का अभाव:

जन संचार के माध्यमों से प्रकाशित या प्रसारित सामग्री की प्रतिक्रिया तुरंत नही मिलती, प्रायः विविध प्रकार के सर्वेक्षणों या श्रोताओं अथवा दर्शकों के पत्रों के माध्यम से ही इनकी लोकप्रियता या अरोचकता का ज्ञान होता है ।

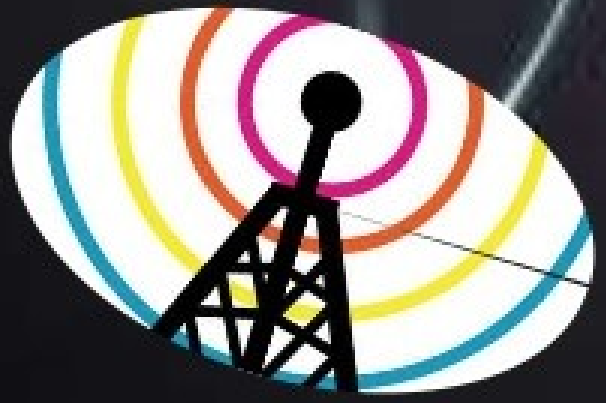

प्रिंट माध्यम : समाचार और संपादकीय

- प्रिंट मीडिया का आशय है- छपाई वाले संचार माध्यम
- इसे मुद्रण माध्यम भी कह सकते है
- इसके कुछ निम्नलिखित रूप हैं-

❖ समाचार पत्र
❖ पत्रिकाएँ
❖ पुस्तकें
❖ इश्तिहार, आदि

समाचार पत्र के कुछ अवधारण

- जन संचार का सबसे पहला, महत्वपूर्ण तथा सर्वाधिक और विस्तृत माध्यम- समाचार पत्र और पत्रिका है ।

- समाचार पत्र का कार्य तीन भागों मे बाँटा है-
  - समाचारों को संकलित करना
  - संपादन करना
  - मुद्रण तथा प्रसारण करना

- पत्रकारिता शब्द का आरंभ समाचार पत्र और पत्रिकाओं से हुआ. आजकल रेडियो, दूरदर्शन तथा नेट-समाचार इसके अंतर्गत आता है ।
- समाचारों को संकलित करने वालों को सँववाददाताओं के नाम से जाना जाता है ।
- समाचारों को छापने योग्य बनाने वाले विभाग संपादकीय विभाग कहते है ।
- छापेखाने के आविष्कार का श्रेय जर्मनी के जोनिस गूटेनबर्ग को है ।
- हिन्दी का पहला समाचार पत्र 1826 मे पंडित जुगलकिशोर शुक्ला द्वारा कोलकाता से प्रकाशित किया गया ।

/kU;okn!